तरु-सिंचन

पेड़-पौधों को जल-दान का महत्व

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

दिनांक : ३ अप्रैल, ०४

मंगल कामना

पर्यावरण सेवा से विश्व–ब्रह्माण्ड के हर प्राणी का कल्याण होता है, अतः वह प्रत्यक्ष फल देने वाली ईश्वर–साधना है। पर्यावरण–संरक्षण की दृष्टि से जो वृक्ष जितना ही अधिक महत्वपूर्ण था उसे ऋषियों ने धार्मिक दृष्टि से उतना ही अधिक महत्त्वपूर्ण घोषित कर, उनकी सेवा विधि बताकर लोगों को आत्म–कल्याण का मार्ग दिखाया। पीपल, तुलसी, बरगद आदि की सेवा के विविध व्रत ऋषियों ने इसीलिए निर्धारित किए थे।

पर्यावरण का संकट प्राचीन काल की तुलना में आज और अधिक गंभीर हो गया है, मानव समेत समस्त प्राणी समुदाय का जीवन कष्टमय और अस्तित्व संकटग्रस्त हो गया है, ऐसे में ऋषि प्रणीत पर्यावरण सेवा से लोगों को जोड़ना बहुत ही बड़े पुण्य का कार्य है। सौभाग्य से अभी भी पर्यावरण संरक्षण के अनेक व्रतों को हमारी बहनें बहुत मनोयोग से करती हैं। सोमवती अमावस्या व वटसावित्री पर्व पर पीपल, बरगद को जल देने के लिए सजधज कर घरों से निकला बहनों का हुजूम हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्पित युगशक्ति नारी को प्रणाम करने को बाध्य करता है। शायद बताने की आवश्यकता नहीं है कि घर–घर में तुलसी को प्रतिदिन जल देने का कार्य कौन करता है ?

हमें अपार खुशी है कि प्रस्तुत पुस्तिका भी आप तक हमारी एक धर्मशील बहन के पुण्य पुरुषार्थ वश पहुँच रही है, इनके इस पुरुषार्थ की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है। इस पुस्तिका के लेखक भाई राधेकृष्ण दूबे जी ने जिस कामना से इस पुस्तिका की रचना की है उसे वन्दनीया माताजी और पूज्य गुरुदेव पूर्ण करेगें ऐसी हमारी प्रार्थना है।

(डॉ० प्रणव पण्ड्या)

(शैलबाला पण्ड्या)

ईश्वरः सर्वभूतानां कृपया वृक्षमाश्रितः।

ईश्वर सभी प्राणियों पर कृपा करने के लिए वृक्षों में निवास करते हैं।

स्कन्दपुराण 6.24.24

'नमस्तेऽस्तु महावृक्ष पारयेन्मे पतिव्रतम्।
कौशल्यां चैव पश्येम सुमित्रां च यशस्विनीम्।'
इति सीताञ्जलिं कृत्वा पर्यगच्छन्मनस्विनी।।

'महावृक्ष ! आपको नमस्कार है। आप ऐसी कृपा करें जिससे मेरे पतिदेव अपने व्रत को पूर्ण करें तथा हम लोग वन से सकुशल लौटकर माता कौशल्या तथा यशस्विनी सुमित्रा देवी का दर्शन कर सकें।' इस प्रकार कहकर मनस्विनी सीता ने अंजलि किये हुए उस (वट) वृक्ष की परिक्रमा की।

– वाल्मीकीय रामायण 2.55

विषय सूची

1.	प्रारम्भ	1
2.	मन को शान्ति	3
3.	प्राणि–जगत् का आशीर्वाद	4
4.	तरु की अकाल मृत्यु से रक्षा का पुण्य	5
5.	समाज को शीतल हवा देने का परोपकार	7
6.	पितरों का आशीर्वाद	8
7.	देवताओं की कृपा	10
8.	प्रेतात्माओं को तृप्ति देने का पुण्य	16
9.	ग्रह–नक्षत्रों की अनुकूलता	18
10.	तरु–सिञ्चन के विशिष्ट माह	20
11.	अन्य मनोकामनाओं की पूर्ति	22
12.	अपेक्षित सावधानियाँ	28

प्रारम्भ

अगर यह कहा जाये कि सम्पूर्ण सृष्टि वृक्षों पर आश्रित है तो अतिशयोक्ति न होगी। जहाँ वृक्षों की उपेक्षा हुई वहाँ विनाश हुआ, जहां इन्हें महत्व दिया गया वहां सतयुगी सुख की अविरल गंगा प्रवाहित होती रही। कई हजार वर्षों का हमारा विश्व इतिहास इसका साक्षी है। मनुष्य का उद्‌भव वनों में हुआ है, इनके पूर्वज करोड़ों वर्षों से वनो पर ही आश्रित जीवन व्यतीत करते रहे है। अतः मनुष्य के जेहन में वन की आवश्यकता बहुत गहराई तक व्याप्त है। वह इनसे दूर रह कर स्थाई आन्तरिक तृप्ति नहीं प्राप्त कर सकता। शायद यही कारण है कि महानगरों में रहने वाले लोगों को वनों के दर्शन, संस्पर्शन व परिक्रमण में असीम सुख की प्राप्ति होती है।

वृक्षों की सेवा से सम्पूर्ण सृष्टि की सेवा करने का पुण्य कार्य सम्पन्न होता है। वृक्षों की सेवा में जल से सिंचन का स्थान सर्वोपरि है। पर्याप्त जल पाने से वृक्ष के जीवन की रक्षा होती है, ये तेजी से बढ़ते है, इन पर आश्रित प्राणियों को सुख मिलता है व पर्यावरण सुधरता है। यह तो हुई तरु सिञ्चन की भौतिक व्याख्या। मानवी चेतना पर शोध करने वाले ऋषियों का मानना है कि तरुसेवा में व्यक्ति जो श्रम और पुरुषार्थ व्यय करता है उससे उसका पाप क्षीण होता है, पुण्य बल बढ़ता है व इसके प्रभाववश सभी प्रकार के दुःख–दुर्भाग्य दूर होते है व सुख–सौभाग्य का अभ्युदय होता है। यह अर्जन बिना श्रम के नहीं बल्कि तपस्या के बदले होता है। जल सिञ्चन के बहाने पवित्र वृक्षों का सान्निध्य हमे सद्‌विचार व उस पर चलने की शक्ति देता है और व्यक्तित्व का परिष्कार करता है।

पर्यावरण सेवा के माध्यम से आत्म कल्याण करने की अद्‌भुत विधा ऋषियों ने विकसित की। कब किस वृक्ष को किस प्रकार सिंचन किया जाय, जिससे व्यक्ति का अधिकतम कल्याण हो, इसके लिए अनेक व्रत बनाये गये जिसमें कुछ व्रत आजकल भी प्रचलन में है, किन्तु वे मूल उद्‌देश्य से भटक गये है। अमर सुहाग के लिये जेठ की गरमी से झुलसते बरगद की सिंचाई के लिये निर्धारित वटसावित्रीव्रत का बरगद मात्र कटोरी

भर जल पाता है, बदले में अगरबत्ती की आग तथा कुछ नासमझों द्वारा पूजा के लिये शाखा काटने की पीड़ा पाता है।

लोग पेड़–पौधों को जलदान द्वारा सही ढंग की पर्यावरणीय सेवा कर अपना कल्याण कर सकें इसी उद्देश्य से ऋषियों, वनविदों व पर्यावरणविदों के ज्ञान को संकलित कर अगले पन्नों में प्रस्तुत करने का एक विनम्र प्रयास किया जा रहा है।

जल की कमी का वृद्धि पर भारी असर

जल की पर्याप्तता पौधों के भोजन निर्माण पर दो तरह से प्रभाव डालती है, एक तो कार्बन डाई आक्साइड के साथ रासायनिक अभिक्रिया कर भोजन निर्माण व दूसरे स्टोमेटा को पर्याप्त जल दबाव से खोले रखना जिससे पत्ती में बाहर से कार्बन डाई आक्साइड आती रहे। डी. थोडे नामक वैज्ञानिक ने सूरजमुखी की हल्की मुरझाई व पूर्ण तृप्त पौध के भोजन निर्माण मे दस गुने का अन्तर पाया। ओ. बर्नबेक ने पाया कि स्टोमेटा खुले रहें तो भी पानी की कमी पौध में भोजन बनाने की गति को बहुत धीमी कर देती है। पेड़–पौधों के लिए जल की आवश्यकता पर अध्ययन करने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक टी.टी. कोल्जोवस्की ने पाया कि वृद्धिकाल में पौधों को पानी न मिलने से बढ़त की बहुत हानि होती है इस कमी का कुप्रभाव पौधों की अगले वर्ष की बढ़त पर भी पड़ता है। एन.एफ. चिल्डर्स नाम के वैज्ञानिक ने अपने शोध में पाया कि मुरझाया सेब वृक्ष सामान्य सेब वृक्ष की तुलना में मात्र 15 प्रतिशत भोजन बना पाता है, मुरझाये पौधे में पर्याप्त पानी देने के बावजूद सामान्य वृद्धि 2 से 7 दिन में आ पाती है जो यह बताती है कि पानी की कमी पौध में कुछ संरचनात्मक विकृतियां भी ला देती है।

मन को शान्ति

वृक्ष बहुत ही निश्छल होते हैं। वे अपनी खुशी और गम को छिपा नही पाते। मुरझाई पत्तियों वाले वृक्ष को सींचने का असर कुछ ही क्षणों में दिखलाई देने लगता है, सिकुड़ी उदास पत्तियाँ कुछ ही क्षणों में सरसता और हरियाली से तर दिखने लगती है, वृक्ष का झुका सिर जीवन रस से तृप्त होकर आकाशोन्मुख हो झूमने लगता है। लटकती बाहें ऊर्जा से भरकर जल दाता का जयघोष करने की मुद्रा में आ जाती है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पौधों के मूड में आये इस परिवर्तन का समानान्तर प्रभाव इसे सींचने वाले मनुष्य के मन पर भी पड़ता है और वह सिंचित पौध की ही भाँति तुरन्त स्फूर्ति, तृप्ति, ऊर्जा और आनन्द से भर उठता है। यही कारण है कि पेड़ पौधों की निराई, गुड़ाई, सिंचाई आदि में व्यस्त रहने को मानसिक स्वास्थ्य की सर्वोत्तम औषधि बताया गया है। सिचिंत जल के प्रभाव वश बीजों का अंकुरण, भूमि मे दबी जड़ों–कन्दों का अकुरण, वृक्ष में नयी कलिकाओं का उगना और उनका तेजी से बढ़ना, मन की बड़ी से बड़ी निराशा को मारने की महौषधि है।

वृक्षमित्र पुरस्कार से सम्मानित वन अधिकारी श्री डी.एस. नेगी उदास व निराश लोगों को पौधशाला में जाकर अंकुरित होते बीज और बढ़ते हुए पौधों को देखने के लिए प्रेरित करते थे। चिकित्सा विज्ञान में मानसिक रूप से टूट चुके रोगियों को जल प्रभाव वश तेजी से अंकुरित विस्तरित व पल्लवित होती वनस्पतियों को दिखाने का प्रयास किया जाता है।

हम सब अपने घरों में 'मनी प्लान्ट' लगाते हैं, लोग कहते हैं जिस घर में यह पौधा तेजी से अच्छा स्वास्थ्य लेकर बढ़ता है उस घर में खूब रूपया आता है तथा जिस घर में यह क्षयग्रस्त रहता है वहां रुपयों की हानि होती है। हो सकता है इस विश्वास में कोई सत्यता हो किन्तु मनोवैज्ञानिक यही मानते है कि 'मनी प्लान्ट' घर वालों के मन पर अपनी स्थिति का प्रभाव डालता है जिससे उनकी क्रियाशीलता व उत्पादकता प्रभावित होती है।

प्राणि-जगत् का आशीर्वाद

गर्मी के महीने पशु–पक्षियों के लिये कठिनाई भरे होते है। किसानों के खेत फसल–रहित हो चुके रहते है, खेतों के कीड़े मकोड़े भूमिगत हो चुके होते हैं; ऐसे में उन्हें भोजन की सबसे बड़ी आशा बरगद, पीपल, पाकड़, गूलर आदि वन्य–वृक्षों से ही होती हैं। पेड़ पौधों को गर्मी के दिनों में थावला बनाकर जल देने से पशु पक्षियों को निम्न लाभ मिलते हैं–

1. *भोजन*

जल देने से वृक्षों में खूब फल–फूल, कोपलें व पत्तियाँ आती है; जिससे पशु पक्षियों को नमी से भरी पर्याप्त भोज्य सामग्री मिल जाती है। इन दिनों ऐसे वृक्षों को जल देने वाला सैकड़ों पशु–पक्षियों को ताजे पत्र, पुष्प व फल खिलाने का महान पुण्य प्राप्त करता है।

2. *शीतलता*

जल देने से वृक्षों में पर्याप्त शीतलता छाई रहती है जिससे पशु पक्षियों व विशेषकर उनके अण्डे बच्चों की लू की लपटों से रक्षा होती है। इस प्रकार पेड़ पौधों को जल देने से निराश्रित प्राणी जगत् को शीतल आश्रय प्रदान करने का पुण्य मिलता है।

3. *पीने को पानी*

पेड़–पौधों के थावलों में भरे गये जल से अन्य पशु पक्षियों को पीने का पानी मिल जाता है। इससे वृक्ष सिञ्चन कर्ता को गर्मी में पशुपक्षियों को जल पिलाने का पुण्य फल भी मिलता है।

अश्वत्थं पूजितं सिक्तं सर्वभूतसुखावहम्।
सर्वामयहरं चैव सर्वपापौघहारिणम्।।

पीपल वृक्ष की पूजा व सिंचाई सभी प्राणियों को सुख देने वाली, सभी कष्ट और पाप हरने वाली है। स्कन्दपुराण 6.247

तरु की अकाल मृत्यु से रक्षा का पुण्य

तरु–सिञ्चन से पेड़–पौधों की अकाल मृत्यु से निम्न प्रकार रक्षा होती है–

सूखे से

वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद भूमि की नमी तेजी से सूखने लगती है और क्रमशः गहराई में सिमटने लगती है। ऐसे में वे पौधे जिनकी जड़ें गहराई तक नहीं जा सकी है, वे जलाभाव में सूख जाते है। यह समस्या रोपण के प्रथम दो वर्षों में अधिक दृष्टिगोचर होती है। यही नहीं तेज सूखा व अधिक लू पड़ने पर पुराने वृक्ष भी अपनी जलापूर्ति सुनिश्चित नहीं कर पाते और जलाभाव में मर जाते है।

अतः पेड़ पौधों को दिया जाने वाला जल उनकी जीवन रक्षा में बहुत सहायक होता है। यही नहीं पौधों को जल देते रहने से इनकी जड़ों को गहराई में वृद्धि करने की अतिरिक्त सहायता मिल जाती है जिससे वे गहरे जल स्तर से अपना सम्पर्क स्थापित कर लें। सार्वाजनिक भूमि पर लगाये जाने वाले वृक्षों में अधिकांश की मृत्यु जलाभाव वश प्रथम वर्ष में ही हो जाती है।

इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध वनविदों चैम्पियन और सेठ का कहना है –

`Final success depends in a very large measure on the stocking and growth obtained in the first season, and irigation will often result in a very marked improvement in both respects over what is attainable without it. ...

With irrigation, it is ordinarily possible to sow or plant at the beginning of the hot weather and so to gain two or three months growing season, thereby hastening the time when

the plantation will close up, reducing weeding cost and the period of exposure to most forms of damage threatening small plants.`

- **H.G. Champion & S.K. Seth**
in General Silviculture for India, Page-321

अतः इन पौधों की सिंचाई कर इनकी जीवन रक्षा करना वृक्षारोपण से अनेक गुना अधिक पुण्यदायी कृत्य है।

तपन और आग से

गरमी के तेज तापक्रम में कभी–कभी पौधे झुलस कर मर जाते है, किन्तु यदि इन पौधों को पर्याप्त सिंचाई होती रहे तो ये पौधे गर्मी में भी ठंडे बने रहते है और तपन की जलन से झुलसने से बच जाते हैं। यह नहीं जिन वृक्षारोपणों में सिंचाई होती रहती है उनमें आग का खतरा नहीं रहता क्योंकि वहाँ सूखी पत्तियों जल्दी सड़ जाती है, हरी घास उग आती है और पेड़ व भूमि ठंडे होने से आग से बच जाती है।

पाले से

सिंचित वृक्षों में पाले से मृत्यु का खतरा कम होता है।

जानवरों से

सिंचाई करने से वृक्ष बहुत तेज बढ़ते है और शीघ्र ही जानवरो से नुकसान पहुँचाने की ऊँचाई से ऊपर उठ जाते है।

खर-पतवार से

पौधों को खर पतवार से दबाये जाने का खतरा तभी तक रहता है जब तक वे छोटे रहते है। प्रारंभिक अवस्था में सिंचाई कर तेज वृद्धि करा देने से रोपित पौध को खर पतवार द्वारा दबा कर समाप्त करने का खतरा शीघ्र समाप्त हो जाता है।

समाज को शीतल हवा देने का परोपकार

वृक्ष पानी को पत्तियों से वाष्पोत्सर्जित करते है जिसके प्रभाव वश इनके चारों ओर शीतल, नम वातावरण वन जाता है। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून परिसर में अरेकेरिया वृक्षों के नीचे भूतल पर लू के दिनों में बाहर की तुलना में तापक्रम 14.4 ^{O}C कम पाया गया, वायु की शुष्कता यहां निश्चय ही बाहर से बहुत कम रही होगी। पानी की उपलब्धता के आधार पर ही वृक्ष अपनी इस शीतकारी क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। घरों के आसपास स्थित पीपल, बरगद आदि के पेड़ तो गर्मियों में लगभग कसम खा कर बैठ जाते है कि वे अपने गाँव या मुहल्ले वालों पर लू को कहर नहीं ढाने देंगे। किन्तु काश ! इसमें आप का भी कुछ योगदान हो जाता ! सीमित जल के अभाव में जब ये हाँफने लग जाते है तो ये आपके प्राण की रक्षा के लिये आपसे पानी चाहते है, तभी तो ऋषियों ने कम से कम बैशाख मास भर पीपल को थावला बनाकर जल से भरने का निर्देश दिया, ज्येष्ठ में वटसावित्री के माध्यम से लगातार तीन दिन तक थावला बनाकर बरगद को जल से भरने का निर्देश किया। आपके घर से सैकड़ों मीटर की दूरी पर यदि पीपल का कोई बड़ा वृक्ष जल से तृप्त है तो विश्वास करें आपके क्षेत्र में किसी को लू नही लगेगी। भगवान के बनाये इन सार्वजनिक कूलरों में घरेलू कूलरों से सैकड़ो गुना अधिक शक्ति और ताजगी होती है बशर्ते आप इनमें जल डालने का थोड़ा पुरूषार्थ दिखायें।

वास्तव में गर्मियों में पेड़ पौधों को जल दान करने से सामान्य जनों की लू से रक्षा करने का बहुत बड़ा पुण्य कार्य सम्पन्न होता है।

यं दृष्ट्वा मुच्यते रोगैः स्पृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते।
यदाश्रयाच्चिरंजीवी तमश्वत्थं नमाम्यहम्।।

जिनके दर्शन से रोग समाप्त हो जाते हैं, जिनके स्पर्श से समस्त पाप समाप्त हो जाते हैं जिनका आश्रय लेने वाला चिरंजीवी होता है उन पीपल को मैं प्रणाम करता हूँ।

पितरों का आशीर्वाद

पीपल, आम, आँवला व तुलसी में पितरों की कामना करके सिंचन करने से वह जल पितरो को प्राप्त होता है।

आम्र सिञ्चन

आम्र सिञ्चन के सम्बन्ध में व्याकरण ग्रन्थ महाभाष्य की यह उक्ति अति प्रसिद्ध है–

आम्राश्च सिक्ताः पितरश्च प्रीणिताः।
एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा।।

आम को सींचने वाला पितरों को प्रिय होता है। इस प्रकार एक क्रिया से दो कार्य सिद्ध होते है।

आंवला सिञ्चन

धर्म सिन्धु के कार्तिक मास कृत्य में आंवला मूल में देव पूजा विधि के अन्तर्गत कार्तिक मास में जल या दुग्ध से सिंचन करते समय निम्न मंत्र का उच्चारण बताया गया है।

पिता पितामहश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः।
ते पिवंतु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः।।

पिता, पितामह व पुत्रहीन सगोत्री पितर ये सब आँवले की जड़ में दिये हुए अक्षय जल का पान करें।

श्रीहरिभक्तिविलास के 13वें विलास में यह धात्रीसिञ्चनफल और विस्तार से कहा गया है यथा–

'पिता पितामहाश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः।
वृक्षयोनिं गता ये च ये च कीटत्वमागताः।।

रौरवे नरके ये च महारौरवसंज्ञके।
त्रियोनिञ्च गता ये च ये च ब्रह्माण्डमध्यगाः।।

पिशाचत्वं गता ये च ये च प्रेतत्वमागताः।
ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूले सदा पयः।।

ते सर्व्वे तृप्तिमायान्तु धात्रीमूलनिषेचनात्।।
इति धात्रीं चाभिषिच्य वारानष्टोत्तरं शतम्।
ताञ्च प्रदक्षिणीकृत्य कुर्य्याज्जागरणं व्रती।।

'पिता, पितामह, पुत्रहीन सगोत्री, वृक्षयोनि-कीटयोनि में गये, रौरव व महारौरव नरक में पड़े त्रियोनि में गये व ब्रह्माण्ड मध्य में स्थित, पिशाच व प्रेत रूप को प्राप्त आत्मायें आँवले की जड़ में मेरे द्वारा दिये गये दूध/जल को पियें, तथा वे लोग आंवले की जड़ के सिञ्चन से तृप्त हों'। इस प्रकार आंवले का एक सौ आठ बार सिंचन करने के बाद वृक्ष की प्रदक्षिणा करें व जागरण व्रत करें।

पीपल सिञ्चन

धर्मसिन्धु के वैशाख मास कृत्य में कहा गया है कि–

'वैशाख माह में प्रातः स्नान कर बहुत से जल द्वारा पीपल की जड़ को सींचे। अनेक प्रदक्षिणा करे, तो कुल का तारण होता है।'

मृतक की तेरहवीं समाप्त होने के बाद मृतक आत्मा की तृप्ति के लिये अश्वत्थ पूजन किया जाता है। जिससे तीन सौ साठ घड़े जल से अर्थात् वर्ष भर तक उसे सीचने का संकल्प लिया जाता है, जो निम्न प्रकार है–

अद्येत्याद्यमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं सपरिवारस्य मरणोत्तरशुभफलप्राप्त्यर्थं तथाऽमुकगोत्रस्यामुक शर्मणोऽस्मत्पितुरक्षयतृप्तिकामनायै विष्णुस्वरूपस्य अश्वत्थस्य पूजनं षष्ट्यधिकशतत्रयसंख्याक जलकुम्भैरअभिषेचनं च करिष्ये।

बेल सिञ्चन

बृहद्धर्मपुराण के अनुसार चातुर्मास व चैत्र मास में बेल सिंचन से पितरों को तृप्ति होती है।

चैत्रादिचतुरोमासान् सिञ्चयेद्विल्वतरूं कृती।
यथा स्निग्धो भवेद्वृक्षस्तथा तत्पितरोऽपि च।।

चैत्र व चातुर्मास में बेल वृक्ष का सिञ्चन करने पर वृक्ष जिस प्रकार स्निग्ध (उल्लास मय) हो जाता है, उसी तरह जल दाता के पितर भी स्निग्ध हो जाते हैं।

देवताओं की कृपा

देवता जल पीने के लिये वृक्षों में आते हैं

स्कन्दपुराण के चतुर्मास महात्म्य में ब्रह्माण्ड की समस्त देव आत्माओं का जल पीने के लिए वृक्षों में आ जाने का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है।

शूद् उवाच–
महदाश्चर्यमेतद्धि यत्सुरा वृक्षरूपिणः।
चातुर्मास्ये समायाते सर्ववृक्षनिवासिनः।। 1।।

भगवन्के सुरास्ते तु केषुकेषु निवासिनः।
एतद्विस्तरतो ब्रूहि ममानुग्रहकाम्यया।। 2।।

शूद्र ऋषि ने कहा-यह महान आश्चर्य है कि ये देवता वृक्ष रूप हैं जो वरसात में सभी वृक्षों में निवास करके रहते हैं। भगवन्! कृपाकर विस्तार से बतायें कि कौन देवता किस-किस वृक्ष में निवास करते हैं।

गालव उवाच–
अमृतं जलमित्याहुश्चातुर्मास्ये तदिच्छया।
लीलया विधृतं देवैः पिवन्ति द्रुमदेवताः।। 3।।

तस्य पानान्महातृप्तिर्जायते नाऽत्रसंशयः।
बलं तेजश्च कान्तिश्च सौष्ठवं लघुविक्रमः।। 4।।

गालव ऋषि ने कहा-जल को अमृत कहा गया है, अतः जल पीने की इच्छा से देवता लोग बरसात में लीलापूर्वक वृक्षों में धारित हो जाते हैं। वृक्ष के माध्यम से जल पीकर देवताओं को महान तृप्ति होती है तथा इसे पीने से उन्हें शीघ्र ही बल, तेज, कान्ति, सौष्ठव व विक्रम प्राप्त होता है।

गुणा एते प्रजायन्ते पानात्कृष्णांशसंभवात्।
नित्यामृतस्य पानेन बलं स्वरूपं प्रजायते।। 5।।

भोजनं तत्प्रशंसंति नित्यमेतन्न संशयः।
तस्माच्चतुर्षु मासेषु पिबन्ति जलमेव हि।। 6।।

वृक्षस्थाः पितरो देवाः प्राणिनां हितकाम्यया।
वृक्षाणां सेवनं श्रेष्ठं सर्वमासेषु सर्वदा।। 7।।

चातुर्मास्ये विशेषेण सेविता सौख्यकारकाः।
तिलोदकेन वृक्षाणां सेचनं सर्वकामदम्।। 8।।

स्कन्द म.पु. 6.252

नित्य अमृत का पान करने से उन्हें बल और स्वरूप प्राप्त होता है क्योंकि यह ही उनका भोजन है। इसीलिए वृक्षों में स्थित पितरों व समस्त प्राणियों की हित कामना से वृक्षों की सेवा सभी महीनों में श्रेष्ठ कार्य है। वर्षाकाल में यह सेवा विशेष सुखकारी होती है। तिलमिश्रित जल से वृक्ष का सिञ्चन सभी कामनाओं को पूरा करने वाला है।

कौन से देवता किस वृक्ष में जल पीने आते हैं ?

उपरोक्त की निरन्तरता में ही स्कन्द पुराण में विभिन्न वृक्षों में जल पीने के लिए प्रविष्ट होने वाले देवताओं का नाम वर्णन निम्नानुसार किया गया है।

प्रजानांपतयः सर्वे चूतवृक्षसमाश्रिताः।। 20।।
गन्धर्वा मलयं वृक्षमगुरुं गणनायकः।
समुद्रा वेतसं वृक्षं यक्षाः पुन्नागमेव च।। 21।।
नागवृक्षं तथा नागाः सिद्धाः कंकोलकं द्रुमम्।
गुह्यकाः पनसं चैव किन्नरा मरिचं श्रिताः।। 22।।

प्रजापति आम के वृक्ष में, गन्धर्व चन्दन में, गणेशजी अगरू वृक्ष में, समुद्र सैलिक्स वृक्ष में, यक्ष पुन्नाग में, नाग नागकेसर में, सिद्ध कंकोलक (मुश्कदाना, लताकस्तूरी) वृक्ष में, गुह्यक कटहल में, किन्नर मरिच में स्थित होते हैं।

यष्टीमधुं समाश्रित्य कन्दर्पोभूव्यवस्थितः।
रक्तांजनं महावृक्षं वह्निराश्रित्य तिष्ठति।। 23।।
यमो विभीतकं चैव बकुलं नैर्ऋताधिपः।
वरुणं खर्जुरीवृक्षं पूगवृक्षं च मारुतः।। 24।।
धनदोऽक्षोटकं वृक्षं रुद्राश्च बदरीद्रुमम्।
सप्तर्षीणां महाताला बहुलश्चामरैर्वृतः।। 25।।

कामदेव मुलहठी में, अग्निदेव रक्ताजंन में यमराज बहेड़े में, नैर्ऋत मौलश्री में, वरुण खजूर में, मारूत सुपाड़ी वृक्ष में आवृत होते हैं। कुबेर अखरोट में, रूद्र बेर वृक्ष में, सप्त ऋषि गण नारियल में आवृत होते हैं।

जम्बूर्मेघैः परिवृत्ता विद्युताऽशोक एव च।। 33।।
वसुभिः स्वीकृतो नित्यं प्रियालश्च महानगः।
आदित्यैस्तु जपावृक्षो ह्यश्विभ्यां मदनस्तथा ।। 34।।

विश्वेभिश्च मधूकश्च गुग्गुलः पिशिताशनैः।
सूर्येणार्कः पवित्रेण सोमेनाथ त्रिपत्रकः।। 35।।

जामुन में बादल गण, अशोक में विद्युत, चिरौंजी में बसु, सूर्य गुड़हल में, अश्विनी कुमार धतूरे में, विश्वेदेव महुए में, गुग्गुल वृक्ष में पिशाच। सूर्य आक में, चन्द्र पलाश में...

खदिरो भूमिपुत्रेण अपामार्गो बुधेन च।
अश्वत्थो गुरुणा चैव शुक्रेणोदुम्बरस्तथा।। 36।।

शमी शनेश्चरेणाथ स्वीकृता शूद्रजातिभिः।
राहुणा स्वीकृता दूर्वा पितृणां तर्पणोचिता।। 37।।

विष्णोश्च दयिता नित्यं चातुर्मास्ये विशेषतः।
केतुना स्वीकृतो दर्भो याज्ञिकेयो महाफलः।। 38।।

मंगल खैर में, बुध अपामार्ग (लटजीरा) में, बृहस्पति पीपल में, शुक्र गूलर में, शनि शमी में, राहू दूब में, केतु की कुश में निवास की स्वीकृति हैं।

मुमूर्षूणां मोक्षरूपो धरासंस्थो महाद्रुमः।
अस्मिन्वसंति सततं ब्रह्मविष्णुशिवाः सदा।। 40।।

मूले मध्ये तथाऽग्रे च यस्य नामापि तृप्तिदम्।
अन्येऽपि देवा वृक्षांस्तानधिश्रित्य महाद्रुमानः।। 41।।

प्रवर्त्तते हि मासेषु चतुर्षु च न संशयः।
चातुर्मास्ये देवपत्न्यः सर्वा वल्लीसमाश्रिताः।। 42।।

मरने के इच्छुक लोगों के लिए धरती पर पीपल मोक्ष रूप में है। इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, हर समय निवास करते हैं। इस वृक्ष के मूल मध्य या अग्रभाग का नाम भी तृप्ति देने वाला है। चातुर्मास में अन्य देवों का आश्रय भी पीपल वृक्ष ही है। वर्षा काल में देव पत्नियां लताओं पर आश्रित हो जाती हैं।

प्रयच्छंति नृणां कामन्वांछितान्सेविता अपि।
तस्मात्सर्वात्मभावेन पिप्पलो येन सेवितः।। 43।।

सेविताः सकला वृक्षाश्चातुर्मास्ये विशेषतः।
तुलसी सेविता येन सर्ववल्यश्च सेविताः।। 44।।

आप्यायितं जगत्सर्वमाब्रह्मस्तंबसेवितम्।
चातुर्मास्ये गृहस्थेन वानप्रस्थेन वा पुनः।। 45।।

ब्रह्मचारियतिभ्यां च सेविता मोक्षदायिनी।
ऐतषां सर्ववृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।। 46।।

चातुर्मास्ये विशेषेण विना यज्ञादिकारणम्।

स्कन्द पुराण 6.252

पीपल की सेवा करने पर मनुष्य की सभी कामनायें पूरी होती हैं। चातुर्मास में सर्वभाव से पीपल की सेवा करने से सभी वृक्षों की सेवा हो जाती है। तुलसी की सेवा करने से सभी लताओं की सेवा हो जाती है। इस प्रकार इस सिञ्चन से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को तृप्त देने वाली सेवा होती है। यह सेवा चातुर्मास में गृहस्थ वानप्रस्थ व ब्रह्मचारी को मोक्ष प्रदान करने वाली है। इसलिए यज्ञादि की आवश्यकता के बिना विशेषकर चातुर्मास में इन वृक्षों को नहीं काटना चाहिए (क्योंकि इन दिनों इसमें देवता निवास कर रहे होते हैं)।

वृक्षों की देवताओं से उत्पत्ति

अनेक पुराणों में वृक्षों की उत्पत्ति देवताओं के अंश से बताई गयी है और कहा गया है कि इन देवाताओं को अपने से उत्पन्न वृक्ष से प्रेम होता है अर्थात् जब इन वृक्षों की जल से सेवा की जाती है तो उस वृक्ष के देवता प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते है। आइये देखते हैं किस देवता से किस वृक्ष की उत्पत्ति हुई–

(क) वामन पुराण

वामन पुराण के अध्याय 18 में देवताओं के अंश से वृक्षों की उत्पत्ति का वर्णन विस्तार से निम्नानुसार किया गया है–

'पुलस्त्य ने कहा – हे ब्रह्मन ! अश्विन मास में जब विष्णु की नाभि से कमल उत्पन्न हुआ उसी समय अन्य देवों से ये वस्तुएं (वृक्ष आदि) उत्पन्न हुई–कामदेव के हाथ के अगले भाग से सुन्दर कदम्ब उत्पन्न हुआ इसीलिए कदम्ब से उसकी परमप्रीति बढ़ती है। हे नारद ! यक्षों के राजा मणिभद्र से बरगद उत्पन्न हुआ, इसलिए उसमें उसका सदा प्रेम होता है। महेश्वर के ह्रदय पर सुन्दर धत्तूर वृक्ष उत्पन्न हुआ अतएव वह शिव को सदा प्रिय है। ब्रह्मा के मध्य शरीर से मरकत मणि के समान खैर वृक्ष की उत्पत्ति हुई और विश्वकर्मा के शरीर से सुन्दर कंटकी वृक्ष उत्पन्न हुआ।

पार्वती की हथेली पर कुन्द गुल्म पैदा हुआ तथा गणेश के कुम्भ में सिन्धुवारक (मेउड़ी) वृक्ष विराजमान हैं। यमराज के

दाहिने पार्श्व मे पलाश और दक्षिणोत्तर पार्श्व (वाम) में काली गूलर (कठगूलर) का वृक्ष उत्पन्न हुआ। रूद्र से उद्वेजक अडूसा की उत्पत्ति हुई। स्कन्द से बन्धुजीव (दुपहरिया), सूर्य से पीपल, कात्यायनी से शमी और लक्ष्मी के हाथ में बेल का वृक्ष पैदा हुआ। हे ब्रह्मन् ! शेषनाग से सरपत उत्पन्न हुआ तथा वासुकि के विस्तृत पुच्छ और पीठ पर श्वेत और कृष्ण दूर्वा उत्पन्न हुई। साध्यों के हृदय में हरित चन्दन वृक्ष उत्पन्न हुआ। इस प्रकार उत्पन्न होने से उन सभी वृक्षों में उन उन देवताओं अनुरक्ति होती है।'

(ख) स्कन्दपुराण

स्कन्द पुराण के अनुसार एक बार पार्वती ने क्रुद्ध होकर देवताओं को श्राप दिया कि–*आप सब एक अंश से वृक्ष होंगे, देवी के ये वचन सुनते ही देव एक-एक अंश से वृक्ष बन गये।*

भगवान विष्णु–पीपल, सदाशिव–बरगद ब्रह्मा पलाश, इन्द्र अर्जुन बने। वह इन्द्राणी और दूसरी देव पत्नियां लता हो गयीं, उर्वशी आदि अप्सरायें मालती आदि पुष्प वृक्ष बनीं।

और भी कहा गया है–

पार्वती बिल्ववृक्षस्थां लक्ष्मीं च तुलसीगताम्।
आदौ सर्वं वृक्षमयं पूर्वं विश्वमजायत।। 22।।

एते वृक्षा महाश्रेष्ठाः सर्वेदेवांशसंभवाः।
एतेषां स्पर्शनादेव सर्वपापैः प्रमुच्यते।। 22।।

स्कन्दपुराण 6.247

पार्वती जी बेल वृक्ष में व लक्ष्मी जी तुलसी में स्थित है। सृष्टि के प्रारम्भ में सबसे पहले वृक्ष सभी देवताओं के अंश से उत्पन्न हुए इसलिए ये बहुत श्रेष्ठ हैं इनके स्पर्श मात्र से ही सभी पाप भाग जाते हैं।

(ग) पद्मपुराण के अनुसार

अश्वत्थरूपीभगवान्विष्णुरेव न संशयः।
रुद्ररूपीवटस्तद्वत्पलाशो ब्रह्मरूपधृक्।।

दर्शनं पूजनं सेवा तेषां पापहरा स्मृता।
दुःखापव्याधिदुष्टानां विनाशकरणीध्रुवम्।।

प.पु. उत्तर खण्ड अ. 115

भगवान विष्णु पीपल रूप में, भगवान शंकर बरगद रूप में व ब्रह्मा पलाश के रूप में है। इसमें संशय नहीं हैं। इनके दर्शन, पूजन व सेवा से सभी पाप, दुःख दुष्ट व्याधियों का विनाश हो जाता है यह ध्रुव सत्य है।

वृक्षों में देव निवास के अन्य उद्धरण

(क) तैतरीय संहिता में कहा गया है कि गन्धर्व और अप्सराये बरगद, गूलर, पीपल व पाकड़ पर निवास करती है।

न्यग्रोध औदुम्बर आश्वत्थःप्लाक्ष।
इतीध्मे भवन्त्येते वै गन्धर्वाप्सरसां गृहाः।।

समिधा बरगद, गूलर, पीपल या पाकड़ की होनी चाहिए क्योंकि ये गन्धर्व और अप्सराओं के गृह (निवास) हैं। *तैतरीय संहिता III 4-8-4*

(ख) भविष्योत्तर पुराण में कहा गया है कि–

तत्रास्थिता महादेवी पार्वती शंकरप्रिया।
विजया जया गणेशेन संयुता पर्वतात्मजा।।
भविष्योत्तर पुराण मधूक तृतीया व्रत

महुए में पार्वती जी शिव, गणेश व विजया, जया के साथ स्थित रहती हैं।

अन्ततः मेरी धारणा है कि धार्मिक महत्त्व के पेड़–पौधों में **देव शक्तियों** का अपार सागर भरा पड़ा है। ऋषियों ने पेड़–पौधों के बारे में जो बातें कहीं हैं वे अतिशयोक्ति नहीं बल्कि उनके स्वयं की अनुभूति पर उतरे पूर्ण सच हैं। ऋषि सत्यभाषी होते थे, उनमें पांडित्य प्रदर्शन की महत्वाकांक्षा नहीं होती थी, वे तो बस लोक कल्याण की भावना से अपने अनुभवों को सरल शैली में श्रद्धालुओं को सुना देते थे या लिपिबद्ध कर देते थे अतः उनकी कही बातों पर श्रद्धा कर उसका सही अर्थ समझने का प्रयास करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि अब वह दिन दूर नहीं जब विदेशी वैज्ञानिक यह रहस्योद्घाटन कर देंगे कि पीपल धरती का सबसे महत्त्वपूर्ण वृक्ष है तो इन वृक्षों को निकृष्ट लकड़ी के रूप में मूल्यांकन करने वाले हम वनविद अपने पारम्परिक ऋषि–ज्ञान के प्रति वास्तविक श्रद्धा से अविभूत हो उठेगे।

प्रेतात्माओं को तृप्ति देने का पुण्य

मत्स्यपुराण में कहा गया है कि–मृत्यु के पश्चात् प्रेतात्मा 'बारह दिनों तक अपने गृह, पुत्र और पत्नी की तरफ देखती है–

तस्मान्निधेयमाकाशे दशरात्रं पयस्तथा।
सर्वदाहोपशान्त्यर्थमध्वश्रमविनाशनम्।।

मत्स्य पुराण–अ. 18

'अतः उसकी समस्त जलन को शान्त करने मार्ग की थकावट के विनाश करने के निमिन्त दस रात तक आकाश में (पीपल वृक्ष में बंधा हुआ) जल घट रखना चाहिए।'

इसीलिये मृतक का दाह संस्कार पूरा करने के बाद प्रेत आत्मा को तृप्ति देने के लिए जल से भरा घड़ा पीपल वृक्ष पर लटकाया जाता है जिससे बूँद–बूँद कर जल पीपल की जड़ पर गिरता रहता है।

प्रेत मंजरी में शव दाह के दूसरे दिन से प्रेत के निमित्त जलदान करने की विधि निम्न अनुसार दी गयी है।

अथ द्वितीयदिनमारभ्यदशरात्रावच्छिन्नप्रातः सायंकाले पिप्पलसमीपे जलदीपदानं दद्यात्ततोऽश्वत्थशाखावलम्बित जलपूर्ण घटवाक्यम्। अद्यामुकगोत्रामु– कप्रेत एष त्वद्गताध्वतापश्रमनिवर्तकोऽशौचांतदिनपर्यंतमश्वत्थशाखावलम्बितजलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

द्वितीय दिन से दस रात्रिपर्यंत प्रातः सायंकाल में पिप्पल के समीप जल और दीपक का दान देना चाहिए तत्पश्चात् पिप्पल की शाखा में जल भरा घड़ा लटकाकर रखे और अमुक गोत्र-मंत्र पढ़ कर जल अर्पण करे।

श्राद्धविवेक ग्रन्थ में उपरोक्त **प्रेतमञ्जरी** ग्रन्थ में वर्णित मंत्र से थोड़ी सी भिन्नता है जो निम्न प्रकार है–

द्वितीयदिनमारभ्य दशरात्रावछिन्नं प्रातः सायंकाले पिप्पलसमीपे जलदीपदानम्।

दूसरे दिन से लेकर दस दिन तक पर्यन्त प्रातः व सांय पीपल के समीप **निम्न 'सर्वतापो'** आदि मंत्र पढ़कर जल देना चाहिए।

सर्वतापोपशमनध्वश्रमविनाशनम्।। प्रेततृप्तिकरं वारि पिब प्रेत ! सुखी भव।। अद्यामुक–गोत्रामुकप्रेत एष त्वद्गताध्वतापश्रमनिवर्तकोऽशौचातं दिनपर्यन्तमश्वत्थशाखा–वलम्बितजलपूर्णघटः सतिलस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

आज अमुक गोत्र के अमुक प्रेत के सभी कष्टों की शान्ति व थकान के विनाश के लिए मेरे द्वारा तिलयुक्त जल से घड़ा पीपल की शाखा से लटकाकर अशुद्धि काल तक के लिये दिया गया है उसे हे प्रेत! मैं आपको देता हूँ, आप वहां बैठें, तृप्तिकारी जल को पियें और सुखी हों।

पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक पुस्तक के अनुसार–यथासंभव पीपल वृक्ष की शाखा पर शरीर की संकल्पना करते हुए जल पूर्ण मिट्टी का घड़ा लटकाकर घड़े में नीचे छिद्र कर ऐसी व्यवस्था करे जिससे जल बूँद–बूँद टपकता रहे तत्पश्चात् प्रेत से निम्नानुसार प्रार्थना करें–

अकामेतु निरालम्बो वायुभूत निराश्रय।
प्रेतघंटो मयादत्तस्तवैष उपतिष्ठताम्।।
चितानल प्रदग्धोऽसि परित्यक्तोऽसि बान्धवैः।
इदं नीरमिदं क्षीरं अत्र स्नाहि इदं पिब।।

हे कामना रहित, आधार रहित, वायुभूत, निराश्रित प्रेत! इस घंट में मेरे द्वारा दिया गया जल आप ग्रहण करें। चिता की अग्नि से दग्ध और अपने बान्धवों से परित्यक्त आप इस जल मिश्रित दुग्ध से स्नान करें और पियें।

तुलसीदास की प्रेत को शौच जलः–मान्यता है कि जीवात्मा समुचित अन्त्येष्टि संस्कार के बाद प्रेत योनि से मुक्त हो जाती है, किन्तु ऐसे लोग जो अकाल मृत्यु को प्राप्त होते है, उनकी जीवात्मा जीव की स्वाभाविक मृत्यु की अवधि तक प्रेत अवस्था में रहती है तथा अपनी संस्कार श्रेष्ठता के अनुसार किसी वृक्ष आदि पर रहती है। इन्हें प्यास अधिक सताती है। इन वृक्षों को जल देने से ये तृप्त हो जाते है। महाकवि तुलसी दास के बारे में कहा जाता है कि जिन दिनों वे भगवान राम के दर्शन को बेचैन थे उन दिनो अनजाने मैं शौच के बाद बचे जल को बबूल की जड़ में डाल देते थे। इससे बबूल के पेड़ पर रहने वाला एक प्रेत बहुत प्रसन्न हुआ तथा सामने प्रकट होकर तुलसीदास को हनुमान जी के दर्शन का पता बताया था। प्रेतात्माओं से लाभ प्राप्त करने में दक्ष लोगों की मान्यता है कि चालीस दिन तक बबूल के पेड़ को शौच का बचा पानी देने से प्रेत दर्शन देकर मनोकामना पूरी करता है।

ग्रह-नक्षत्रों की अनुकूलता

ग्रह शान्ति

शनि ग्रह की शान्ति के लिए पीपल या शमी वृक्ष को जल देने के लाभ से हर कोई परिचित है। भारतीय मान्यता में हर ग्रह के लिए एक वनस्पति प्रजाति निर्धारित है जिसकी समिधा से हवन करने से सम्बन्धित ग्रह की शान्ति होती है।

विभिन्न ग्रहों की शान्ति के लिये निर्धारित समिधा वनस्पतियां निम्नानुसार है–

सूर्य–आक, **चन्द्र**–पलाश, **मंगल**–खैर, **बुध**–अपामार्ग, **बृहस्पति** –पीपल, **शुक्र**–गूलर, **शनि**–शमी, **राहु**–दूब, **केतु**–कुश।

सबसे अधिक भय देने वाले ग्रह शनि की शान्ति के लिये शनिवार को शमी की जड़ में शनि की पूजा की जाती है (शमी न उपलब्ध होने पर पीपल) की जड़ में पूजा की जाती है। जिसकी विस्तृत विधि हर जगह मिल जाती है। **इसमें वृक्ष को जल देना प्रमुख कार्य होता है।** उपरोक्त की ही भांति अन्य ग्रहों की शान्ति के लिये सम्बन्धित ग्रह की वनस्पति को जल दान कर सम्बन्धित ग्रह की शान्ति की जा सकती है जैसा कि इसी पुस्तिका में पृष्ठ 12 पर दिये गये **स्कन्दपुराण** के सन्दर्भ से स्पष्ट है।

नारद पुराण में कहा गया है कि जब जिस नक्षत्र में शनि विद्यमान हो उस समय उस **नक्षत्र–वृक्ष की सेवा (सिञ्चन) करने से भी** शनि ग्रह शान्त होते हैं।

नक्षत्रों की अनुकूलता

ऋषियों के अनुसार हर नक्षत्र का एक वृक्ष निर्धारित है। मनुष्य का जन्म जिस नक्षत्र में हुआ रहता है उस नक्षत्र के वृक्ष का उस मनुष्य पर

बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। अगर आप अपने नक्षत्र वृक्ष का संवर्द्धन करते है तो आपके सुख–सम्पति आरोग्य आदि की वृद्धि होगी तथा यदि आपके आसपास स्थित आपका नक्षत्र वृक्ष क्षतिग्रस्त हो रहा है या पीड़ाग्रस्त है तो आपको भी पीड़ा होगी। ये सभी बातें नारद पुराण, नारद संहिता, राजनिघण्टु व अन्य तान्त्रिक व आयुर्वेदिक ग्रन्थों में विस्तार से कही गयी है जिस पर लेखक की 'नक्षत्र–वृक्ष' नाम से एक अलग पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। यहां नक्षत्रों के नाम के आगे उनके वृक्ष का नाम दिया जा रहा है।

1. **अश्विनी**–कुचिला 2. **भरणी**–आंवला 3. **कृत्तिका**–गूलर 4. **रोहिणी**–जामुन 5. **मृग शिरा**–खैर 6. **आर्द्रा**–शीशम/काला तेंदू 7. **पुनर्वसु**–बाँस 8. **पुष्य**–पीपल 9. **अश्लेषा**–नागकेसर 10. **मघा**–बरगद 11. **पूर्वाफाल्गुनी**– पलाश 12. **उत्तराफाल्गुनी**–पाकड़ 13. **हस्त**–रीठा 14. **चित्रा**–बेल 15. **स्वाती**–अर्जुन 16. **विशाखा**–विककंत (कंटारी) 17. **अनुराधा**–मौलश्री 18. **ज्येष्ठा**–चीड़ 19. **मूला**–साखू 20. **पूर्वाषाढ़ा**–सैलिक्स 21. **उत्तराषाढ़ा**–कटहल 22. **श्रवण**–मदार 23. **धनिष्ठा**–शमी 24. **शतभिषक**–कदम्ब 25. **पूर्वाभाद्रपद**–आम 26. **उत्तराभाद्रपद**–नीम 27. **रेवती**–महुआ।

किसी भी वृक्ष की अभिवृद्धि में जल की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है, अतः इन वृक्षों के किनारे अच्छा सा थावला बनाकर पर्याप्त जल से सिञ्चन करने से इनकी खूब वृद्धि होती है जिसका परिणाम घर में हर प्रकार से सुख–शान्ति व आरोग्य के अभिवर्द्धन में फलित होता है।

अश्वत्थे स्थापिते यस्तु मूले स्नपनमाचरेत्।
धनायुःसन्ततैर्वृद्धो नरकात्तारयेत् पितृन्।।

पद्मपुराण उ.ख. अ. 126

पीपल वृक्ष को स्थापित कर वृक्ष की जड़ को सिञ्चन करने से धन, आयु व सन्तान की वृद्धि होती है तथा पितर लोगों का नरक से उद्धार होता है।

तरु-सिञ्चन के विशिष्ट माह

वैशाख मास में पीपल को जलदान

निर्णय सिन्धु के वैशाख मास कृत्य में कहा गया है–

प्रातः स्नात्वा विधानेन माधवे माधवप्रियम्।
योऽश्वत्थमूलमासिञ्चेत्तोयेन बहुना सदा।।

कुर्यात्प्रदक्षिणां तं तु सर्वदेवमयं ततः।
पितृदेवमनुष्यांश्च तर्पयेत्सचराचरम्।।

योऽश्वत्थमर्चयेदेवमुदकेन समन्ततः।
कुलानामयुतं तेन तारितं स्यान्न संशयः।।

कण्डूय पृष्ठतो गांतु स्नात्वा पिप्पलतर्पणम्।
कृत्वा गोविन्दमभ्यर्च्य न दुर्गतिमवाप्नुयात्।।

भगवान विष्णु के प्रिय माह वैशाख में प्रतिदिन प्रातः विधिपूर्वक स्नान कर बहुत से जल से पीपल वृक्ष की जड़ को चारों तरफ से सींचे और सर्वदेवमय इस वृक्ष की परिक्रमा करने के बाद अपने पितरों आदि का तर्पण करें। जो अपने कुल नाम आदि का स्मरण कर पीपल वृक्ष की चारों ओर से जल द्वारा अर्चन करता है उसके पिता तर जाते हैं। जो पीपल के तने को खुजलाते सहलाते हुए स्नान कराकर तर्पण करता है वह भगवान विष्णु की अभ्यर्चना करता है और कभी भी दुर्गति को नही प्राप्त होता।

पद्मपुराण क्रियायोगसारखण्ड (अ. 12) में कहा गया है–

'अर्थ, धर्म, काम मोक्ष की प्राप्ति के लिये विष्णु भक्तों को वैशाख मास में नित्य विष्णु रूपी पीपल का सिञ्चन करना चाहिए। जो मात्र कुल्ले भर के पानी से पीपल का सिञ्चन कर देता है वह करोड़ों पापों से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त करता है।'

ग्रीष्मकाल में तुलसी को जलदान

पद्मपुराण क्रियायोगसार में कहा गया है–

'चिन्वन्ति तृणजातानि तुलसीमूलजानि वै।
तद्देहस्था ब्रह्महत्याश्चिनोति तत्क्षणाद्धरिः।।

ग्रीष्मकाले द्विजश्रेष्ठ ! सुगन्धैः शीतलैर्जलैः।
तुलसीसेचनं कुर्यान्नरो निर्वाणमाप्नुयात्।।

चन्द्रातपं वा छत्रं वा तुलस्यै यस्तु यच्छति।
विशेषतो निदाघेषु स मुक्तः सर्वपातकैः।।

वैशाखेऽक्षतधाराभिरद्भिर्यस्तुलसीं जनः।
सेचयेत् सोऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोति नित्यशः।।

कदाचित्तुलसीं दुग्धैः सेचयेद् यो नरोत्तमः।
तस्य वेश्मनि विप्रर्षे ! लक्ष्मीर्भवति निश्चला।।

गोमयैस्तुलसीमूले यः कुर्यादनुलेपनम्।
सम्मार्जनं च कुरुते तस्य पुण्यफलं शृणु।।

रजांसि तस्य यावन्ति दूरीभूतानि जैमिने !
तावत्कल्पसहस्राणि मोदते ब्रह्मणा सह।।

जो भक्त लोग तुलसी की जड़ में निराई करते हैं उनके ब्रह्महत्या सदृश्य पाप भी नष्ट हो जाते हैं। ग्रीष्म-ऋतु में सुगन्धित जल तुलसी को देने से उन्हें स्वर्ग प्राप्त होता है। तुलसी के ऊपर चंदोवा या छाता बनाने-बनवाने पर, सो भी विशेषतया ग्रीष्म-ऋतु में, सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। **वैशाख-मास में तुलसी को लगातार धार बांध कर पानी देने से अश्वमेध का फल प्राप्त होता है।** और जो दूध से तुलसी को सींचता है, उसके घर में लक्ष्मी निश्चल होकर बैठ जाती हैं। तथा जो भक्त तुलसी के मूल में सफाई करके गोबर से लेपन करता है उसके सभी रजोगुणी पाप नष्ट होकर उसे हजारों कल्पों तक ब्रह्मलोक में निवास का सौभाग्य प्रदान होता है।'

चतुर्मास में पीपल को जल दान

भविष्योत्तर पुराण में कहा गया है–

उदकुम्भप्रदानेऽपि ह्यशक्तो यः पुमान् भवेत्।
तेनाश्वत्थतरोर्मूलं सेंच्य नित्यं यतात्मना।।
सर्व्वपापप्रशनं सर्व्वदुःखप्रणाशनम्।
सर्वरोगप्रशमनं नित्यं सन्ततिवर्द्धनम्।।
अश्वत्थरूपी भगवान् प्रीयतां मे जनार्दनः।
इत्युच्चार्य नमस्कृत्य प्रत्यहं पापनाशनम्।।
यः करोति तरोर्मूले सेकं मासचतुष्टयम्।
सोऽपि तत् फलमाप्नोति श्रुतिरेषा सनातनी।।

जो मनुष्य अशक्त होने पर भी प्रतिदिन घड़े के जल से पीपल की जड़ को एकाग्र मन से सिंचन करता है उसके सभी पाप, दुःख व रोग नष्ट हो जाते हैं तथा घर परिवार की समृद्धि पाता है **'हे पीपल रूपी भगवान् जनार्दन मुझ पर प्रसन्न होइए'**–यह कहकर प्रणाम करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जो चतुर्मास में इस वृक्ष की जड़ का सिंचन करता है उसे सभी दुर्लभ फल प्राप्त हो जाते हैं।

अन्य मनोकामनाओं की पूर्ति

वृक्षों का सिंचन करने से विविध मनोकामनाओं की पूर्ति होती है, यहां इसके कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण संक्षेप में दिये जा रहे है, विस्तृत विवरण के किये कर्मकाण्ड ज्ञाता से सम्पर्क करना चाहिए।

1. बालवैधव्ययोग का नाश

यदि कन्या की कुण्डली में बाल विधवा का योग हो तो वह पीपल, शमी या बेर की श्रद्धा पूर्वक सिंचाई करने से समाप्त हो जाता है जिसकी विस्तृत विधि **ज्ञान–भास्कर** ग्रन्थ में निम्न प्रकार से दी गयी है।

अश्वत्थव्रतस्य एकान्तकर्तव्यता, कालः, प्रयोगः, फलं च।

बलवद्विधवायोगे बाल्ये सति मृगीदृशाम्।
पिता रहसि कुर्वीत तद्भङ्गं शास्त्रसम्मतम्।।

सुदिने शुभनक्षत्रे चन्द्रताराबलान्विते।

अवैधव्यकरे योगे लग्ने ग्रहबलान्विते।
व्रतारम्भं प्रकुर्वीत बालवैधव्यनाशकम्।।

अश्वत्थ व्रत का एकान्त में किया जाने वाला प्रयोग, काल व फल : कन्या के बाल विधवा योग होने पर उसे शास्त्र सम्मत विधि से समाप्त करने के लिए पिता को अच्छे दिन, अच्छे ग्रह नक्षत्र व अवैधव्यकर योग में बालवैधव्यनाशक इस व्रत का आरम्भ करना चाहिए।

सुस्नातां चित्रवस्त्राढयां कन्यां पितृगृहाद्बहिः।
नीत्वाऽश्वत्थशमीस्थाने यद्वा बदरिकाश्रमे।।

आलवालं प्रकुर्वीत विपुलं मृदुकर्षितम्।
कुमार्याचार्यनिर्दिष्टं कृतसंकल्पमादरात्।।

करकाम्बुप्रपूर्णेन सिञ्चनं प्रतिवासरम्।
चैत्रे चाऽऽश्विनमासे च तृतीयासितपक्षतः।।

यावत्कृष्णतृतीयां मासमेकं यथाविधि।
ब्राह्मणानां तथा स्त्रीणां पूजनं च समाचरेत्।।

तदाशिषाऽऽप्नुयात्कन्या सौभाग्यं च सुखान्वितम्।
प्रतिमां पार्वती शानीं वैणवे भाजनेऽर्चयेत्।।

चन्दनाक्षतदूर्वाद्यैर्बिल्वपत्रैर्यथाविधि।
उपचारैर्यथा भक्त्या नैवेद्यैः प्रतिवासरम्।।

एवं व्रतप्रभावेण बालवैधव्यनिष्कृतिः।
जायते कन्यकानां च ततः पाणिग्रहक्रिया।।

घर से स्नान कराकर अच्छे वस्त्र पहनाकर पिता पुत्री को घर के बाहर पीपल, शमी या बेर के वृक्ष के पास ले आये तथा काफी मिट्टी खोदकर वृक्ष का थावला बनवाये। फिर कन्या आचार्य के निर्देश में आदरपूर्वक संकल्प धारण कर जल भरे पात्र से प्रतिदिन वृक्ष को सींचे। चैत्र या क्वार की शुक्ल तृतीया या कृष्ण तृतीया से एक माह तक यथा विधि सींचे। ऐसा करने से कन्या को सुख सौभाग्य प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त होता है। बाँस के पात्र (टोकरी) में पार्वती की प्रतिमा को चन्दन, अक्षत, दूर्वा, बिल्व पत्र यथा विधि अर्पित कर षोडषोपचार पूर्वक पूजा कर प्रतिदिन भक्तिपूर्वक भोग लगावे। इस व्रत के प्रभाव से कन्या का बाल वैधव्य योग निष्क्रिय हो जाता है, इसके बाद कन्या का विवाह करना चाहिए।

2. दुर्लभ वर की शीघ्र प्राप्ति

भविष्यपुराण के उत्तर पर्व सोलहवें अध्याय में महुए की पूजा द्वारा कन्या के लिये दुष्प्राप्य दुर्लभ वर प्राप्त करने का व्रत बताया गया है। कहा गया है कि जो कन्या इस उत्तम तृतीया (मधूक तृतीया) व्रत को करती है वह तीनों लोकों में दुष्प्राप्य भगवान विष्णु के समान पति प्राप्त करती है यथा–

एतत्करोति या पुत्री तृतीयाव्रतमुत्तमम्।
ततः प्राप्स्यति दुष्प्राप्यं त्रैलोक्ये श्रीधरं पतिम्।।

पुराण के अनुसार समुद्र मन्थन से महुवा वृक्ष उत्पन्न हुआ जिस पर भगवती गौरी ने अपनी जया, विजया सखियों सहित आश्रय ग्रहण किया। मधूक तृतीया व्रत फाल्गुन मास की शुक्ल तृतीया को किया जाता है जिसमें पवित्रता व व्रत पूर्वक विविध वस्तुओं से महुए के वृक्ष की पूजा की जाती है। प्रार्थना का मंत्र है–

ॐ भूषिता देवभूषा च भूषिका ललिता उमा।
तपोवनरता गौरी सौभाग्यं मे प्रयच्छतु।।
दौर्भाग्यं मे शमयतु सुप्रसन्नमनाः सदा।
अवैधव्यं कुले जन्म ददात्वपरजन्मनि।।

'तपोवनरता हे गौरी देवि ! आपका नाम ललिता तथा उमा है। आप देवताओं की आभूषण स्वरूपा एवं सभी को आभूषित करने वाली है और स्वयं आभूषित है। आप मुझे सौभाग्य प्रदान करें। आप मेरे दुर्भाग्य का शमन करें दूसरे जन्म में भी मेरा सौभाग्य अखण्डित रहे। आप सर्वदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

3. वांछित सन्तान की प्राप्ति

जब सन्तान जन्मने से पूर्व या जन्म लेते ही मर जाती हो अथवा इच्छित लिंग की गुणवान सन्तान प्राप्त करने की कामना हो तब **विधानमालाग्रन्थ में** वर्णित विधि से पीपल वृक्ष को जल देने से कामना की पूर्ति होती है। यह विधि निम्न प्रकार है–

यस्य स्त्री स्त्रीप्रसूर्नित्यं मृतापत्याथवा भवेत्।
तेनाशु पिप्पलः पूज्यो यथाविधि फलेप्सुना।।

भृगुवारे प्रदोषे च सायंविधिमुपास्य च।
सभार्य्यः पिप्पलं गत्वा प्रार्थयेत समाहितः।।

यदि स्त्री को मृत सन्तान पैदा होती हो या एक ही प्रकार की सन्तान पैदा होती हो उसे विधिपूर्वक पीपल वृक्ष की पूजा करनी चाहिए। शुक्रवार व प्रदोष को दिन भर उपवास कर पति पत्नी शाम को पीपल वृक्ष के पास जाकर एकाग्रचित्त होकर प्रार्थना करे-

'बोधिद्रुम महावृक्ष महापापनिषूदन।
नारायणस्वरूपस्त्वं क्षमां कुरु जगत्पते।।'

"हे बोधिवृक्ष, हे महावृक्ष, हे महापापनाशक, भगवानस्वरूप जगतपिता आप हमें क्षमा करें।"

इति सम्प्रार्थ्य तं वृक्षं कृत्वा चैव प्रदक्षिणम्।
आलवाले जलं क्षिप्त्वा ततः स्वगृहमाव्रजेत्।।

ब्रह्मचारी स्वपेद्रात्रौ सुप्त्वा भुवि हरिं स्मरेत्।
निधाय तुलसीदाम कण्ठे मुद्रितलोचनः।।

ततः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा गङ्गाजले तिलैः।
गच्छेतां दम्पती ब्रह्मन् पिप्पलान्तिकमादरात्।।

विष्णोर्नामसहस्रञ्च जपेत्तत्र समाहितः।
कुर्य्यात्सम्मार्जनं तत्र ह्यासमन्तात्तरोरधः।।

विकीर्य्य तत्र पुष्पाणि चन्दनञ्च विशेषतः।
कुङ्कुमं केसरञ्चैव पिप्पलाङ्गे विलेपयेत्।

आलवाले क्षिपेद्वारि क्षीरं दधि घृतं मधु।।

अत्रावसरे आचार्य्यादीनां वरणं कार्य्यम्।

इस प्रकार प्रार्थना कर प्रदक्षिणा कर वृक्ष के थावले में जल भरकर अपने घर आये। रात्रि को गले में तुलसी की माला पहन कर बन्द नेत्रों से भगवान का स्मरण कर ब्रह्मचर्य पूर्वक भूमि पर सोयें। प्रातःकाल उठकर गंगाजल व तिल से स्नान कर सदम्पति आदरपूर्वक पीपल वृक्ष के पास जायें और विष्णु सहस्रनाम का जप करें, उसके बाद वृक्ष के चारो तरफ व उपर नीचे जल

छिड़ककर वहां पुष्प, चन्दन, बिखेरे व पीपल के अंग पर केशर कुंकम का लेपन करें, फिर थवाले में जल, दूध, दही, घी व मधु डालें।

इसके बाद आचार्य का वरण कर हवन करें। हवन के बाद पीपल वृक्ष को सूत से घेरे, गन्ध पुष्प अक्षत से वृक्ष के अंगों की अर्चना करे, आरती करे विविध भोग लगाकर तुष्ट करे फिर प्रार्थना करें।

'बोधिद्रुम महावृक्ष महापापनिषूदन।
पुत्रान् देहि जगन्नाथ कुरु मां जीवसन्ततिम्।।'

हे बोधिवृक्ष, महावृक्ष, महापापनाशक, जगन्नाथ हमें पुत्र दें व जीवित सन्तान दें।'

इस प्रकार वृक्ष को प्रार्थना व प्रणाम करके आचार्य की पूजा करें व उन्हें विविध दान दे, भोजन करायें भगवान के 24 नामों का स्मरण करें। इस श्रेष्ठ विधि से पीपल का पूजन करने से अक्षय गुणों से युक्त सन्तान प्राप्त होती है।

4. *अमर सुहाग*

इसके लिये वट सावित्री का व्रत किया जाता है जिसके बारे में हर भारतीय महिला को जानकारी है। किन्तु दुर्भाग्यवश इस व्रत की मूल बात को लोग भूल चुके है, वास्तव में–

1. यह व्रत तीन दिन (त्रयोदशी, चतुर्दशी व अमावस्या) में पूरा होता है।

2. इस व्रत में बरगद को तीन दिन तक खूब जल से सींचने को होता है जैसा कि विधि बताती है–

स्नात्वा चैव शुचिर्भूत्वा वटं सिञ्चेदबहूदकैः *अर्थात् स्नान कर पवित्र हो बहुत से जल से बरगद को सींचे।* तथा **दिनांदिनं प्रतिश्रेष्ठं कुर्य्यान्न्यग्रोधसेचनम्।** अर्थात् प्रतिदिन (तीन दिन) श्रेष्ठता पूर्वक बरगद को सींचे। और कहे–**वट सिञ्चामि ते मूलं सलिलैरमृतोपमै।** अर्थात् हे वट! मै। आपकी जड़ को अमृत तुल्य जल से सींचती हूँ।

किन्तु वृक्ष की मूल आवश्यकता जल की जो ज्येष्ठ मास के मध्य में सर्वाधिक होती है को लोग गौण कर देते है और ऐसे पूजन में लग जाते है जिससे वृक्ष को सीधे तृप्ति नहीं होती।

3. यह व्रत बरगद की सेवा कर इनसे पुण्य प्राप्त करने का होता है किन्तु कुछ लोग इस दिन इस वृक्ष की डाल काटकर उसे घर में रोपित कर जल देते है। किसी का गला काटकर उसके मुँह में पानी देने से क्या कभी कोई खुश हो सकता है ? कभी नहीं।

5. सुन्दर-पवित्र-व्यक्तित्व, सुख-सौभाग्य प्राप्ति

केले के वृक्ष को भावनापूर्वक सिंचन करने से पूरे परिवार को सुन्दर, पवित्र व्यक्तित्व प्राप्त होता है, परिवार में श्रेष्ठ अनुकरणीय सच्चरित्रता सरलता व सरसता विकसित होती है, इनकी विस्तृत विधि और उसके फल का वर्णन भविष्योत्तर पुराण से लेकर हेमाद्रि की चतुर्वर्ग चिन्तामणि व व्रतराज पुस्तक में निम्नानुसार दी गयी है।

रंभावृक्षं रोपयित्वा स्वहस्तेन च तं पुनः।
वर्षमेकं तु संपूज्य उदकुम्भेन सेचयेत्।।

इस हेतु अपने हाथ से केले की पौध लगाकर एक वर्ष तक घड़े के पानी से सींचे और पूजे।

अथवा–

यदि लभ्येत कदली तामारोप्य प्रपूजयेत्।
यावत्तस्यां फलं तावत्सिञ्चेनीरेण भूपते।।

यदि केले की पौध मिल जाय तो उसे रोपण कर पूजन शुरू कर दें। जब तक उसके फल न पके तब तक हे राजन् पवित्र जल से सींचता रहे।

उपासना का विज्ञान कहता है कि हम मन से जिसके करीब बैठते हैं (उप = पास, आसना = बैठना) उसके गुण हमारे अन्दर विकसित होने लगते है, केले में देवी की कल्पना कर महिलाये पूजा सिंचन, सेवा करती है ऐसा करने से केले के समान घर में हर प्रकार विकास होता है, व्यक्तित्व में कठोरता, कुटिलता कुरूपता चरित्रहीनता के स्थान पर सरलता, सरसता, सुन्दरता व श्रेष्ठ चरित्र का विकास होता है।

6. दुर्गन्ध-दुर्भाग्य नाश

शरीर से आने वाली दुर्गन्ध व दुर्भाग्य के विनाश के लिये ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को श्वेत आम, लाल कनेर व सपुष्प नीम को जल से सिन्चित कर पूजा करने का विधान **भविष्योत्तर व नारद पुराण** में दिया गया है; ये

तीनों वृक्ष सूर्य भगवान को प्रिय है अतः इनको पूजा भाव से सींचने से सब प्रकार का दुर्भाग्य व दुर्गन्ध सदा के लिए दूर हो जाते है।

7. रोग-नाश

विधान पारिजात में अद्भुत सागर के सन्दर्भ से समस्त रोग, विपत्ति दुःख व भयों के नाश के लिये पीपल वृक्ष की श्रद्धापूर्वक सेवा व परिक्रमा करने का विधान विस्तार से दिया गया है। कहा भी गया है–

क्षयापस्मारकुष्ठादिप्रमेहे विविधज्वरे।
उदरे मूत्रकृच्छे च ग्रहग्रस्ते तथैव च।।
अन्येष्वनुक्तरोगेषु व्रणरोगे तथैव च।
एतेषां रोगनाशाय कुर्य्यादश्वत्थसेवनम्।।

क्षय रोग, मिर्गी, कोढ़, प्रमेह, विविध प्रकार के ज्वर उदर रोग, मूत्रकृच्छ रोग, ग्रह ग्रस्तता, फोड़ा व अन्य विविध रोग पीपल की सेवा करने से नष्ट हो जाते है।

8. पापनाश व सौभाग्य प्राप्ति

पौराणिक मान्यता के अनुसार सोमवारी अमावस्या के दिन बहुत ही पुण्य होता है इस दिन पीपल के मूल में लक्ष्मी सहित विष्णु की पूजा करते हुए पीपल को जल से सींचना चाहिए और परिक्रमा करनी चाहिए इससे सब पापों व दुर्भाग्य का नाश होता है और परम सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

रोपणात्पालनात्सेकाद् दर्शनात्स्पर्शनान्नृणाम्।
तुलसी दहते पापं वाङ्मनःकायसञ्चितम्।।

स्कन्द पुराण कार्तिक माहात्म्य

तुलसी वृक्ष लगाने, पालन करने, सिंचाई करने, दर्शन, स्पर्श से कायिक, वाचिक मानसिक संचित पाप नष्ट हो जाते हैं।

अपेक्षित सावधानियाँ

1. **थावला बनायें:**—वृक्षों को विशेषकर गर्मियों में थावला बनाकर जल देना चाहिए, बिना थावले के वृक्ष या पौध को जल दान करने पर जल ऊपर ही ऊपर बह जाता है, और जड़ों को नहीं मिल पाता।
2. काँटेदार प्रजातियों (शमी, बेल आदि) व नीम को अधिक जल भराव से बचाना चाहिए।
3. **धार्मिक दृष्टि से वृक्ष को जल देने का सर्वाधिक उपयुक्त समय पूर्वाह्न बेला होती है।** वानिकी की दृष्टि में यदि पानी की कमी है तो सिंचन का उपयुक्त समय सायंकाल होता है क्योंकि दिन में सिंचाई करने से कुछ जल बेकार हो जाता है।
4. वृक्ष को जल देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जल धार से जड़ के पास की मिट्टी का क्षरण न हो और न ही जड़ें नंगी होने पायें।
5. वृक्ष को किया गया जल दान वृक्ष को अधिक दिन तक लाभ पहुंचाये इसके लिए जरूरी है कि थावला सूखते ही इसके उपर की सतह में पतली गुड़ाई कर दी जाय और हो सके तो यहां घास पत्ती आदि फैला दी जाय। इससे थावले के नीचे की मिट्टी का पानी उड़ना बन्द हो जाता है।
6. तरु सिन्चन में भावना का अधिक महत्व होता है। जल भावनाओं के सर्वश्रेष्ठ वाहक होते हैं। व्रत रहकर पवित्र होकर दिव्य आत्माओं व वृक्ष को जल पिलाने की भावना से जल देने का सामान्य जलदान से कई गुना अधिक महत्व होता है। सिञ्चन में गंगाजल, सुगन्धित सामग्री, दुग्ध आदि प्रयोग करने से देव आत्मायें खुश होती हैं पितरों की भावना से जल देते समय उसमें तिल मिलाना चाहिए।

सेचनादपि वृक्षस्य रोपितस्य परेण तु।
महत्फलमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

दूसरों द्वारा रोपित वृक्ष का सिंचन करने से भी महान फलों की प्राप्ति होती है, इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण 3-297